डॉ० संगीता राय
अतिथि शिक्षक
संस्कृत विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला :→

प्राचीन साहित्य में काव्य और काव्यों में नाटक को मनोज्ञता की दृष्टि से परमपद प्रदान किया है। तभी तो कहा गया है— काव्येषु नाटकं रम्यं। अर्थात् काव्यों में नाटक रमणीय है। क्योंकि काव्य का प्रमुख प्रयोजन मनोरंजन है जिसकी प्राप्ति नाटक से होती है। प्राचीन साहित्यकारों ने काव्य के दो भेद किए— श्रव्य काव्य एवं दृश्य काव्य। नाटक दृश्य काव्य होने से इसकी रमणीयता, सर्वोत्तमता एवं श्रेष्ठता निर्विवाद रूप से स्वीकार किया गया है। भरतमुनि के अनुसार देवताओं के मनोविनोद पूर्ति हेतु चारों वेदों के सारतत्वों संगीत, संवाद, अभिनय एवं रस का समावेश करके ब्रह्मा ने नाट्यवेद नामक पंचम वेद की रचना की जो सर्वशास्त्र सम्पन्न तथा सर्वशास्त्र प्रदर्शक है—

"सर्वशास्त्रार्थसम्पन्नं सर्वशास्त्रप्रदर्शकम्।
नाट्यसंज्ञमिमं वेदं सेतिहासं करोम्यहम्॥

कोई भी ऐसा ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग व कर्म नहीं है जो इस नाट्य में दिखाई न देता हो

"न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।
नासौ योगो न तत्कर्मनाट्येऽस्मिन् यन्न दृश्यते।"

स्पष्टतः नाटक वेद, विद्या, इतिहास, आख्यान श्रुति, स्मृति, सदाचार, सभी का पोषक ग्रंथ होने के कारण इसकी रमणीयता निर्विवाद है। भरतमुनि के अनुसार नाटक का प्रयोजन मनोरंजन करना है जो इसकी लोकप्रियता का प्रमुख कारण है। इस संसार में भिन्न-२ रुचि वाले प्राणि है। नाटक

में धर्म, क्रीडा, राजनीति, अर्थनीति, श्रम, हास्य, युद्ध, काम आदि का वर्णन उपलब्ध होता है। विषय की विविधता के कारण भिन्न-2 रुचिवाले व्यक्तियों का मनोरंजन होने के कारण यह काव्यांग सर्वाधिक लोकप्रिय है। इसके अतिरिक्त जनशिक्षण भी नाटक का प्रयोजन है। जनता जितनी सरलता से नाटक से उपदेश ग्राह्य करती है उतना काव्य के अन्य अंगों से नहीं।

काव्य का परम लक्ष्य है - ब्रह्म सहोदर रसास्वाद। नाटक दृश्य काव्य होने से इसमें अभिनय की प्रधानता रहती है। अतः कायिक, वाचिक, आहार्य और सात्विक इन चारों प्रकारों के अभिनय से वस्तु भाव के चाक्षुष प्रत्यक्ष होने के कारण सर्व - साधारण को रसास्वादन प्राप्त होता है। नाटक मानव जीवन की समग्रता उसकी मार्मिकता, उत्पीडन, यथार्थता का भी चित्रण करता है। जीवन के साथ घनिष्ठ साम्य रखने वाले तथा जीवन का यथार्थ रूप प्रस्तुत करने वाले नाटक की रमणीयता स्वतः सिद्ध है।

तत्र रम्या शकुन्तला :→ नाटक दृश्य काव्य का रमणीयतम प्रकार माना गया है और सम्पूर्ण नाट्य साहित्य में कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तल एक रमणीयतम नाटक है। जिसकी पुष्टि विद्वानों ने "काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला" से की है।

महाभारत के आदिपर्व की साधारण कथा को कालिदास ने नाटकीय संयोजन से अत्यंत सरस बना दिया है। अनेक मार्मिक प्रसंगों जैसे शकुन्तला की विदाई शकुन्तला का दुष्यंत द्वारा प्रत्याख्यान आदि तथा दुर्वासा शाप, धीवर प्रसंग जैसी घटनाओं का संयोजन करके कथानक को सरस, प्रभावपूर्ण एवं आदर्शपूर्ण बना दिया है। प्रथम तीन अंकों में प्रणयभूमि में अठखेलियाँ करती हुई इसकी कथा चतुर्थ अंक में कर्तव्य की नियामक रेखाओं से बँधती हुई शाप भूमि पर पहुँचती है। तदन्तर वियोगभूमि में उस कथा का परिष्कार होता है और सप्तमङ्क में पवित्र मिलन से इस कथा की इति श्री होती है।

पात्रों के चरित्र में उत्कर्ष विधायक तत्वों, उत्तम और स्वाभाविक चरित्र चित्रण नाटक की रमणीयता का प्रमुख कारण है। इसके नायक धीरोदात्त गुणों से सम्पन्न दुष्यंत हैं जिनका चरित्र एक आदर्श शासक, आदर्श प्रेमी और वत्सल-पिता के रूप में पर्यवसित है। निसर्ग कन्या शकुन्तला नवयुवती के अवगुण्ठन के साथ-साथ परिणीता, तिरस्कृता व अपमानिता तथा अन्त में समर्पिता पत्नी के गौरव को प्राप्त करती है। महर्षि कण्व वात्सल्य की मूर्ति हैं जो अश्रुपूरित नेत्रों और रुंधे कण्ठ से पुत्री शकुन्तला की विदाई की मार्मिक वातावरण उपस्थित करते हैं —

"यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया।
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः॥

अनुसूया और प्रियम्वदा सखीप्रेम को मूर्त रूप देने वाली दो तापस कन्याएँ हैं। स्पष्टतः शाकुन्तल के प्रत्येक पात्र भारतीय संस्कृति के आदर्शों के अनुरूप हैं।

अभिज्ञान शाकुन्तल नाटक की रमणीयता प्रेम के उच्चतम आदर्श पर टिकी हुई है। कालिदास को कर्तव्य विरोधी प्रेम मान्य नहीं है। शकुन्तला ने आश्रम की मर्यादा को तोड़कर गन्धर्व विवाह किया। उसने क्षणिक प्रेम में उन्मत होकर अपने कर्तव्य का ध्यान नहीं रखा। महर्षि दुर्वासा पुकारते रहे और वह प्रेमी के ध्यान में डूबी रही। कामवश हो कर्तव्य की अपेक्षा की और प्रेम के मंगल भाव को मिटा दिया। जिसका परिणाम शाप और प्रत्याख्यान के रूप में भुगतना पड़ा। दण्ड स्वरूप उसे प्रिय के वियोग से संतप्त होना पड़ा —

विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥

इस प्रकार प्रेमियों का बंधनहीन, अमर्यादित गुप्त मिलन को चिरकाल तक शाप के गहन अंधकार में भटकना पड़ा। प्रायश्चित पूर्ण होने पर मिलन सम्भव हुआ।

आदर्श प्रेम के साथ-2 सौंदर्य का भी व्यंजना इस नाटक में हुई है जो इसे रमणीयता प्रदान करता है। परन्तु कालिदास के इस नाटक में सौंदर्य का तात्पर्य आकृति से नहीं अपितु अन्तरात्मा से है। उनके अनुसार रमणीय आकृति में सहृदयता के ही दर्शन होते हैं वक्रता के नहीं। इसीलिए सौन्दर्य युक्त रमणी केवल उपभोग की वस्तु नहीं है अपितु उसे "गृहिणी सचिव: सखी मिथ: प्रियशिष्याललिते कलाविधौ" के रूप में देखा जाता है। अत: कालिदास ने अपने इस ग्रंथ में आदर्श गृहिणी का रूप प्रस्तुत किया है —

"शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृतापि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामा: कुलस्याधय:॥

शाकुन्तल की विश्व प्रसिद्धि का सर्वाधिक मुख्य कारण है इसका प्रकृति चित्रण। अगर इसे प्रकृति काव्य कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। तपोवन से ही नाटक का प्रारम्भ होता है और मारीच ऋषि के तपोवन में ही इसका अवसान होता है। इस नाटक की नायिका शकुन्तला प्रकृति कन्या ही है जो प्रकृति के उन्मुक्त वातावरण में उत्पन्न हुई पली-बढ़ी एवं महर्षि कण्व के "शान्ते करिष्यन्ति पदं पुनराश्रमेऽस्मिन" कथनानुसार अन्तिम जीवन प्रकृति के आश्रय में ही बीतता है। साथ ही मानव एवं प्रकृति का एक घनिष्ठ संबंध है। दोनों ही एक दूसरे से अपना सुख-दुःख समझते हैं तभी तो शकुन्तला के सुख-दुःख को के विदाई से तपोवन भी कातर हो उठा। हरिणियों ने दर्भकवल

उगल दिए हैं। मयूरों ने नर्तन करना छोड़ दिया और पीले पत्तों के रूप में मानो लताएँ आँसू बहा रही हैं —

"उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः॥

इस प्रकार शाकुन्तल में कवि ने प्रकृति के प्रेम, प्रकृति दृश्यों का सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति का और उसकी कमनीय कल्पनाओं का सुन्दर चित्रण किया है।

अभिज्ञान शाकुन्तल में सुनिश्चित योजनाओं के तहत घटनाओं का संघटन है। इसमें कथा प्रवाह रुकता नहीं है। सभी घटनाएँ एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं जिसका उत्तम उदाहरण है - प्रत्याख्यान के समय विदूषक की अनुपस्थिति। क्योंकि दुष्यंत एवं शाकुन्तला के प्रेम प्रसंग से केवल विदूषक ही परिचित था।

अभिज्ञान शाकुन्तल की रमणीयता का प्रमुख कारण उसकी भाषा शैली है। इसकी भाषा शैली सरल, सरस, परिमार्जित प्रांजल है जो नाटक की प्रौढ़ कृति होने का परिचय देती है। इसकी भाषा पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल एवं वातावरण के अनुकूल है।

ध्वन्यात्मकता कालिदास की शैली की दूसरी विशेषता है। इस नाटक का नैपुण्य किसी बात को ध्वनित या सूचित करने में है। चतुर्थ अंक में कण्वशिष्य को दार्शनिक कथन तथा प्रभातवर्णन द्वारा शकुन्तला के भावी प्रत्याख्यान एवं उसकी असह्यविरह का सूचक है —

"यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना —
आविष्कृतोऽरुणपुरः सर एकतोऽर्कः।
तेजो द्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु॥

कालिदास की शैली की अन्य विशेषता चित्रोपमता है। ग्रीवाभङ्गाभिरामं में मयभीत मृग, सरसिजमनुविद्धं तथा अनाघ्रातं पुष्पं आदि में शकुन्तला के अनिन्द्य सौंदर्य का अनुपम चित्र उपस्थित हुआ है।

रस की गणना नाटक के प्रमुख तत्वों में की गई है। यद्यपि यह नाटक शृंगारप्रधान है। तथापि हास्य, करुण भयानक, वीर आदि रसों का सुन्दर अभिव्यंजना हुई है।

अतः सुगठित कथावस्तु, स्वाभाविक एवं उत्तम चरित्र चित्रण, उदात्त प्रेम एवं सौन्दर्य, प्रकृति चित्रण, उत्कृष्ट भाषा शैली, रसपरिपाक के कारण ही यह नाटक सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में सर्वोत्कृष्ट है तथा "काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला" के उक्ति को चरितार्थ करता है।

—X—